P: ISSN NO.: 2321-290X RNI : UPBIL/2013/55327 VOL-6* ISSUE-7* (Part-1) March- 2019
E: ISSN NO.: 2349-980X **Shrinkhla Ek Shodhparak Vaicharik Patrika**

बूंदी शैली के चित्रों में वैभवपूर्ण आन्तरिक साज–सज्जा के अवयव

सीमा मेहरा
असिस्टेंट प्रोफेसर,
चित्रकला विभाग,
कन्या महाविद्यालय,
आर्यसमाज, भूड़, बरेली

सारांश

भारतीय चित्रकला के विशाल प्रांगण में पल्लवित विभिन्न कला शैलियों में एक मध्यकालीन बूंदी शैली के चित्र लालित्य में परिपूर्ण है। चित्रों में सौन्दर्याभिव्यंजना को प्रस्तुत करने के लिए यहां के चित्रकार ने जीवन के आध्यात्मिक व भौतिक दोनों ही पक्षों को अपने चित्रतल पर उकेरा है। जीवन के भौतिक पक्ष को प्रस्तुत करते बूंदी शैली के चित्रों में भौतिक संसाधन अत्यन्त सौम्यता व सुन्दरता के साथ उभरे हैं।

भौतिक संसाधनों के रूप में अंकित रीतिकालीन श्रृंगारिक काव्य के प्रभाव में भवनों व महलों की अन्तः साज–सज्जा अत्यन्त ही सौन्दर्यपूर्ण रूप में मुखरित हुई है।

वैभवपूर्ण व आकर्षक वातावरण को प्रस्तुत करते आन्तरिक साज–सज्जा में प्रयुक्त विभिन्न उपकरणों जैसे सिंहासन, मसनद, शैय्या, कालीन, पर्दे, सुरापात्र व प्याले आदि ने सशक्त भावाभिव्यक्ति व सुन्दर वातावरण उत्पन्न कर दिया है। उन अवयवों का चित्रकार ने आलंकारिक व उद्दीपन स्वरूप चित्रण किया है।

चित्रों में अलंकृत बॉर्डर से सजे सिहांसन व कुर्सियां, आलंकारिक व काले फूंदने बँधे पर्दे, फूलपत्तियों व ज्यामितीय आकारों से आच्छादित कालीन, समृद्धिशाली आन्तरिक पक्ष को दर्शाती अलंकृत शैय्यायें व उन पर बिछाये गये मोटे गद्दे व झालरदार चादर सौन्दर्यवर्धक मसनद, आलेखनों से सजी चौकियां, सामन्ती परिवेश व विलासी जीवन से जुड़े सुरापात्र व प्याले दृष्टा का अपने सौन्दर्य से बरबस ही मनमोह लेते हैं।

इस शैली में ये भी उपादान विषयवस्तु उभारने के साथ–साथ मानवीय भावों व सौन्दर्याभिव्यंजना के तत्वों के स्वरूप दृष्टव्य होते हुए भौतिकता का सौन्दर्यपूर्ण व सशक्त परिवेश प्रस्तुत करते हैं।

मुख्य शब्द : चित्रकार, सौन्दर्यपूर्ण व सशक्त परिवेश।

प्रस्तावना

अनादि काल से मानव की भावाभिव्यक्ति का माध्यम रही ललित कलाओं में चित्रकला एक ऐसी कला है जिसमें महान तत्वों का समावेश हुआ है। अतीत काल के न जाने कितने ही मानवीय भावों के आकर्षक व विचारोत्तेजक तत्वों का समुचित अंकन सहज व स्वाभाविक रूप में प्रस्फुटित हुआ है। इनके माध्यम से गम्भीर और व्यापक मनोभावों को बड़ी सुगमता व सुन्दरता से जनसाधारण के सम्मुख प्रस्तुत किया जा सकता है। विभिन्न भाषा–भाषी मनुष्यों की उच्चातिउच्च नैतिक विचार धारा तथा उनके रहन सहन एवं तद्भिभूत जीवनगत घटनाओं की वास्तविकता बहुत कुछ अंशो में इस समय की चित्रकला में अन्तर्निहित है। वस्तुतः चित्रकला जीवन की अभिव्यक्ति है जिसने जीवन के प्रत्येक पहलू को स्पर्श कर संवारने का अद्भुत प्रयास किया है।

अध्ययन का उद्देश्य

भारतीय चित्रकला का मध्यकाल सृजन की दृष्टि से अत्यन्त वैभवपूर्ण रहा है। इस समय विकसित बूंदी शैली भी अपने अनुपम व मनोहर रूप में है।

राजस्थान के हाड़ौती क्षेत्र के बूंदी नगर में पल्लवित व पोषित इस कला शैली की अपनी ऐतिहासिक पृष्ठभूमि व संस्कृति रही है और अपनी परम्पराओं में मौलिक व अभिव्यक्ति में यह शैली सशक्त है। इसके चित्रों का अपना एक सौन्दर्यपूर्ण संसार है। यहां के चित्रों में विषयवस्तु को पुष्टता प्रदान करने हेतु विविध अवयवों को चित्रकार ने उनके सौन्दर्यपूर्ण रूप में तो उकेरा ही है साथ ही उन्हें मानवीय भावों से भी जोड़ा है।

यहाँ के कलाकारों की तूलिका से चित्र में निसृत भौतिक संसाधनों के अन्तर्गत अंकित आन्तरिक साज–सज्जा के अवयव चित्र में आकर्षण व अद्‌भुत सौन्दर्य प्रस्फुटित करते प्रतीत होते हैं।

इस शैली के चित्रों के अध्ययन व अवलोकन के उपरान्त यह ज्ञात हुआ कि ये साज–सज्जा के विविध अवयवों में सौन्दर्य का समग्र परिपाक निश्चित ही तत्कालीन समाज व संस्कृति में प्रचलित उनके रूपों का तथा चित्रकार की कलात्मक रूचि का अद्‌भुत प्रस्तुतीकरण है। अपने शोध–पत्र में मैंने इस शैली के चित्रकार की सौन्दर्यपूर्ण परिकल्पना व भावाभिव्यक्ति का अध्ययन की सर्जना की प्रप्रंचना को खोजने का प्रयास किया है। मैने बूंदी शैली के चित्रों में निहित भावों की गहराई और चित्र में संयोजित विविध आन्तरिक साज–सज्जा के उपादानों का सौन्दर्यभिव्यंजक तत्व के रूप में व उनकी उपादेयता का सूक्ष्म दृष्टि से अध्ययन उनके महत्व पर प्रकाश डालने के उद्‌देश्य से किया है।

चित्रकारों ने जीवन के आध्यात्मिक तथा भौतिक दोनों ही पक्षों को सदा चित्रांकित किया है। विषय को पुष्टता प्रदान करने के लिए उन्होंने चित्रों में भौतिक संसाधनों का सफलतापूर्वक समायोजन किया है। उनका अंकन उद्‌दीपन रूप में व सौन्दर्यवर्धक तत्व के रूप में तो हुआ ही है साथ–साथ वे विषय परिवेश के विकास में सहायक तथा मानवीय संवेदनाओं से जुडे, हुए भी चित्रित किये गये हैं।

मध्यकालीन रीतिकालीन, कवियों के श्रृंगारिक रचनायें तत्कालीन चित्रकला जगत में चित्रण का प्रमुख आधार रही हैं चित्रकारों ने चित्रों में श्रृंगारिक चित्रण वैभव विलास का वातावरण चित्रित किया है और इस वातावरण से बूंदी का चित्रकार भी अछूता नहीं रहा है। महलों का परिवेश केशव की विलासपूर्ण अभिव्यक्ति के अनुकूल ही चित्रित है।[1] इस शैली के चित्रों में विभिन्न भौतिक उपादानों की सहायता से वैभवपूर्ण वातावरण अंकित किया गया है। उनके द्वारा भवन की आन्तरिक साज – सज्जा में प्रयुक्त विभिन्न उपकरणों में सिंहासन, मसनद, शैय्या, पर्दे, कालीन, सुरापात्र व प्याले आदि मुख्य रूप से अंकित हुए हैं। चित्रकार इनके आलंकारिक चित्रण में किसी भी प्रकार कम नहीं रहा है। उसने अत्यन्त कुशलता के साथ इन्हें चित्र में सजाकर सौन्दर्याभिव्यक्ति की है। तत्कालीन संस्कृति में प्रचलित यह रूप मानव की संवेदनाओं को भी प्रकट करते हैं। चित्रों में इनके माध्यम से सामन्ती जीवन के वैभव तथा सम्पन्नता की झाँकी देखने को मिलती है।

सिंहासन राजसी मानवाकृतियों के चित्रण में एक आवश्यक उपकरण है उनके सौन्दर्यपूर्ण अंकन से चित्रकार ने अपनी कृतियों की शोभा प्रस्तुतीकरण में सहयोग लिया है। विषयानुरूप अपनी उपादेयता को प्रस्तुत करते हुए यह उपादान चित्र में सौन्दर्य को भी सहज ही प्रकट करते हैं।

बूंदी शैली के चित्रकार को राजसी वैभव का अंकन प्रिय रहा है। राजसी रूपाकृतियों के अंकन में सिंहासन नुमा कुर्सियां अलंकृत चित्रित की हैं। प्रायः राजसी रूपाकार इन पर आसीन अंकित हैं। इनके पीछे का भाग ऊपर से कँगूरेदार है उसके चारों ओर अलंकृत किनारा बनाया गया है।

इस शैली के चित्रों में एकल आकृतियों के बैठने के लिए सिंहासन व कुर्सियों को युगल के बैठने में चित्रित सिंहासन को अपेक्षाकृत छोटा बनाया है। इनमें बैठने वाला भाग कहीं चौरस है तो कहीं आयताकार[2] निर्मित किया है। इनके पाँवों के बीच के स्थान पर अलंकृत बॉर्डर बनाया है। इन सिंहासनों के पाँवें भी अलंकृत बनाये हैं।

राजसी दम्पत्तियों के बैठने के लिए प्रयुक्त सिंहासन चौड़ा बनाया गया है। इसके आगे का भाग क्षैतिज व तिर्यक रेखाओं द्वारा षट्‌कोण आकार के आधे भाग जैसा प्रतीत होता है।

कबूतर पालने वाली स्त्री[3] के अंकन में कुर्सी का उत्कृष्ट अलंकरण दृष्टव्य होता है। इस चित्र में कुर्सी की बेडौलता दृष्टव्य होती है। इसमें पाँच पाँवें लगे दर्शाये हैं। इन पाँवों के बीच में पट्‌टियाँ लगाई गई हैं।

तत्कालीन मुगल प्रभाव से बने स्थापत्य की मनोहरी छटा चित्रों में दर्शायी है।[4] महलों में बने वातायन, झरोखे व दरवाजे पर डाले गये पर्दे उनकी संख्या में सौन्दर्य वृद्धि हेतु अपना अमूल्य योगदान देते हैं। इस शैली के चित्रकार को पर्दों के पीछे से झाँकती सज्जाओं तथा नायकों का अंकन भी रूचिकर रहा है। पर्दों को अलंकृत रूप में चित्रित किया गया है। अधिकांशतः ये मोड़कर ऊपर बाँधे गये हैं। बहुत कम चित्रों में ये पूर्ण रूप से खुले दर्शाये गये हैं।

इनका अलंकृत व कलात्मक रूप सहज ही दृष्टा को आकर्षित करता है।

बूंदी शैली में पर्दे अंकन में सादा सपाट बॉर्डर के साथ अलंकृत मध्य भाग तथा सादगी पूर्ण मध्य भाग के साथ अलंकृत किनारा विशिष्टता के साथ उभरा है। चित्रों में इनका रूचिपूर्ण अंकन चित्रकारों की सूझ–बूझ का परिचायक है। इनके अलंकरण अंकन में फूल पत्तियों के अतिरिक्त ज्यामितीय आकारों को भी संजोया है।

कुछ चित्रों में पर्दे के दोनों ओर अलंकरण बनाने की प्रवृत्ति भी देखी गयी है। चित्रकार ने पर्दे के पीछे के भाग में मध्य भूमि सादा तथा बॉर्डर अलंकृत चित्रित किया है। पर्दे को आगे की ओर मोड़कर उसके दोनों रूप प्रदर्शित कर चित्रकार ने अपूर्व कला–कौशल का परिचय दिया है।[5]

कालीन गृहसज्जा उपकरणों में अपनी महत्वपूर्ण भूमिका रखते हैं तथा वैभव को अभिव्यक्त करते हैं। बूंदी शैली में भी रीतिकालीन श्रृंगारिकता का प्रभाव है फलतः चित्रकारों ने विलासी जीवन के विभिन्न संसाधनों को अपनी सर्जनाओं में निरूपित किया है। फूल–पत्तियों से अलंकृत कालीन इस शैली के चित्रों की विशेषता है। सर्जक ने सामन्ती परिवेश के वैभवपूर्ण अंकन को कालीन चित्रण से समृद्ध बनाया है। इस शैली के चित्रों में कालीन के दो आकार परिलक्षित होते हैं। इन्हें फर्श के आकार के बराबर का[6] व कहीं छोटा[7] आसन के समान चित्रित कर दिया है। इसमें अलंकरण के लिए फूल पत्तियों के व ज्यामितीय आकार प्रयुक्त हुए हैं। बूंदी शैली के चित्रों में समृद्धिशाली वातावरण दर्शाने में इनका अंकन अपने

सुरूचिपूर्ण कलात्मक रूप से हुआ है चित्रों में यह सौन्दर्य अंकन मानक रूप में चित्रित हुये हैं।

शैय्या का प्रयोग दैनिक जीवन से जुड़ा हुआ है किन्तु बूंदी शैली के चित्रों में अलंकृत व समृद्धिशाली आन्तरिक पक्ष के चित्रण में इनका योगदान अधिक है।

इस शैली के चित्रों में कलात्मक शैय्याओं का अंकन बहुधा हुआ है। शैय्या बिछाकर अपने प्रिय की बाट जोहती[8] नायिकायें तथा अपनी प्रिया के साथ बैठे नायक[9] का चित्रण बूंदी शैली के चित्रों में दृष्टव्य होता है।

चित्रों में पलंग के ऊपर मोटे गद्दे पर झालरदार चादर बिछायी गई है जो शैय्या के चारों ओर से लटक रही है इस पर बिछी चादरें सादा व फूल पत्तियों से अलंकृत चित्रित की गई है। आलेखन के लिए छोटी बूटियाँ, खड़ी रेखायें तथा बड़े–बड़े फूल प्रायः इस में सुशोभित किये गये हैं।

इस शैली के चित्रों में चादरों के दोनों कोनों पर फूंदने बाँधे हुए भी परिलक्षित होते हैं। इन फूंदनों का अंकन बूंदी की परम्परागत विशेषता के अन्तर्गत हुआ है।

बूंदी शैली के चित्रों में मसनद का अंकन भी अधिकता से प्राप्त होता है। चित्र के सौन्दर्यवर्धक तत्व मसनद चित्रों में दो आकारों में निरूपित हुए हैं। कुछ का आकार बड़ा है[10] कुछ कहीं छोटे आकार[11] के मसनद अपने लुभावने रूप में प्रकट हुय हैं। इस शैली के चित्रों में मसनद का अंकन शैय्या पर रखे ही नहीं हुआ है अपितु नायक–नायिका चौकी पर पृथ्वी पर या सिंहासन पर भी बैठे हैं तो भी उन्हें मसनद का सहारा लिए बैठे दर्शाया गया है।

मसनद अपने कलात्मक, आलंकारिक रूप से आन्तरिक साज सज्जा को समृद्ध बनाते हैं इन्हें विभिन्न रूप प्रदान करने में चित्रकार की कुशलता प्रशंसनीय है। कलाकार इन्हें कहीं सादगीपूर्ण तो कहीं आलांकारिक रूप दिया है। वर्ण योजना में उसकी बौद्धिक क्षमता उभरी है। कालीन के आलेखन से इनकी सादृश्यता दर्शायी गई है। अपने अतुलनीय वैभव से मसनद सहज ही अपने महत्व को प्रदर्शित करते हैं।

चौकी का दैनिक जीवन में महत्वपूर्ण स्थान है किन्तु बूंदी शैली के चित्रों में यह अलंकृत रूप में प्रायः चित्र में सज्जा के हेतु ही प्रयुक्त हुई है। चौकी का प्रयोग प्रायः बैठने के लिए होता है किन्तु बूंदी के चित्रकार ने इन पर मानवाकारों को खड़े हुए चित्रित किया है। इसके अतिरिक्त सिंहासनों के आगे भी चौकी को रखे बनाया है जिसका प्रयोग सिंहासन पर बैठने के लिए सुविधा में सहयोग के लिए किया गया है जिसके ऊपर चढ़कर आसानी से सिंहासन तक पहुंचा जा सके। चित्रों में बैठने के लिए बनी चौकियाँ बड़ी तथा खड़े होने वाली चौकी छोटे आकार की है। इन्हें स्वर्ण का नक्काशीदार बनाया गया है। इसके चारों ओर की दृष्टव्य पट्टियों तथा पाँवों पर महीन–महीन अलंकरण उकेरा गया है। इनके अंकन में सर्जक की कलात्मक अभिरूचि रही है इनके ऊपर का भाग सादा सपाट बनाया गया है। इन्हें प्रायः सिंहासन के आगे रखे हुए अंकित किया गया है।

इस प्रकार बूंदी शैली के चित्रों में अंकित वैभवपूर्ण चित्रण में सहायक तथा सौन्दर्याभिव्यक्ति में इन चौकियों के कलात्मक रूप उल्लेखनीय हैं।

बूंदी शैली के चित्र सामन्ती परिवेश से प्रभावित हैं उसमें विलासपूर्ण जीवन के सभी उपकरण अंकित किये गये हैं। जिसमें सुरापात्र के अंकन का बाहुल्य है उनका प्रयोग चित्रकारों ने आन्तरिक साज–सज्जा के लिए भी किया है यह नायक–नायिका के पास चित्र के अग्रभाग में रखे हुए तो अंकित हैं साथ ही कक्षों की आन्तरिक दीवारों को सपाट नीरस न चित्रित कर कलाकारों ने उसमें बने आलों में सुरापात्रों को संयोजित कर उन्हें उत्कृष्ट रूप प्रदान किया है।

चित्रों में इनका अंकन दो रूपों में मिलता है। एक में इनके नीचे का भाग गोल तथा गर्दन लम्बी व मुख ऊपर से कुछ झुका हुआ बनाया गया है।[12]

दूसरे में इसके नीचे का भाग गोल तथा गर्दन का भाग सीधा खड़ा बनाया गया है।[13]

कहीं–कहीं इस शैली के चित्रों में सुरापात्र के नीचे का भाग पान के पत्ते के आकार के सदृश भी बनाया गया है।

बूंदी शैली के चित्रों में सौन्दर्यवर्धक तत्व यह सुरापात्र प्रायः स्वर्ण के बने दृष्टव्य होते हैं।[14]

रात्रिदृश्यों में इन्हें जालीदार कपड़े से ढ़ककर चित्रभूमि के अग्रभाग में चित्रित किया है। सुरापात्र के साथ प्यालों का अंकन आवश्यक तत्व के रूप में हुआ है।

निष्कर्ष

कलाकारों ने चित्र की विषयवस्तु को उभारने के लिए इन उपकरणों का चित्रण करने में तथा मानवीय भावों को अभिव्यक्ति प्रदान करने में अपनी दक्षता प्रदर्शित की है तथा चित्र में ये समस्त भौतिक संसाधन सौन्दर्य वृद्धि में सहायक है। इन उपकरणों का अंकन हमें अपनी ओर बरबस ही आकृष्ट कर लेता है।

लालित्य से परिपूर्ण इस शैली के चित्रों के इन भौतिक संसाधनों को बड़ी सौम्यता तथा सुन्दरता के साथ अंकित किया गया है। मानव जीवन के भौतिक पक्ष को बतलाते यह उपकरण विभिन्न भावों व सौन्दर्य को अभिव्यक्ति करते हैं।

सन्दर्भ ग्रंथ सूची

1. *डा0 जय सिंह, नीरजः राजस्थानी चित्रकला और कृष्ण काव्य, पृ0–96।*
2. *बिल्ली भगाती स्त्री, 18वीं शती का मध्यकाल, 14X22. 5 से0मी0 प्रिंस ऑफ वेल्स म्यूजियम, मुम्बई, न0 53–92।*
3. *नायिका उड़ते कबूतरों को देखती हुई, 18वीं शती, भारत कला भवन, बनारस नं0 4147।*
4. *एन0सी0 मेहता : दि गोल्डन फ्लूट, फलक–5।*
5. *राजा और रानी कबूतरों को देखते हुए, 1662ई0, 10 1/2 X 11 1/2, भारत कला भवन, बनारस।*
6. *एक प्रेम दृश्य, 17वी शती, सी0डी0 गुजराती संग्रह, मुम्बई।*
7. *दारा शिकोह अपनी पत्नी राना दिल के साथ, 1680 ई0, मीनाक्षी आर0 वीरानी, संग्रह।*

8. *मधुमाधवी रागनी, 1780ई0, अलवर संग्रहालय, अलवर।*
9. *रागनी विभास, 1780ई0, अलवर संग्रहालय, अलवर।*
10. *धन्सरी रागनी, 1680ई0 16.5X25.6 से0मी0 फ्रांसेस ब्रूनेल : इंडियन मिनियेचर्स, फलक–24।*
11. *नायिका अपने प्रिय के लिए व्याकुल, 1780ई0, जे0के0 गालब्रेथ संग्रह कैम्ब्रिज, एम0एस0 रन्धावा व जे0के0 गालब्रेथ : इंडियन पेन्टिंग, फलक–15।*
12. *कृष्ण अपनी प्रिया के साथ, 18वीं शती का अन्तिम काल 23X15.2 से0मी0 प्रिंस ऑफ बेल्स म्यूजियम मुम्बई, नं0 52–55।*
13. *नायक–नायिका जलाशय के किनारे 18वीं शती मध्यकाल, 29.2X19 से0मी0 प्रिंस ऑफ वेल्स म्यूजियम मुम्बई, नं0 55–69।*
14. *राग मालकोस, 1790ई0 चंडीगढ़ म्यूजियम, चंडीगढ़।*